Conclusion

उपसंहार

संत अखा का मूल्यांकन करते समय यह ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है कि वे किसी वाद, पंथ या संप्रदाय में बद्ध नहीं थे । वास्तव में वे सब प्रकार के वादों, पंथों एवं संप्रदायों से परे थे । उनका अपना एक व्यवस्थित एवं मौलिक जीवन-दर्शन था और यही कारण है कि उन्हों ने धर्म के वास्तविक सत्य से दूर पड़े हुए अपने समय के वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन एवं इस्लाम धर्म के पंथों- संप्रदायों के मिथ्याचारों एवं आडंबरों का घोर प्रतिवाद किया । दर्शन के क्षेत्र में भी आचार्य लोग अपनी-अपनी कलाबाजी दिखाने में व्यस्त थे । ऐसे समय में संत अखा ने षड्दर्शनों की खटपट का खंडन कर स्वानुभूत अद्वैतदर्शन की प्रस्थापना की ।

विशेषकर वैष्णव एवं जैन धर्म में प्रचलित होरी - फाग आदि के घोर शृंगारपूर्ण वर्णनों में संयम एवं वैराग्यपूर्ण 'ज्ञान-रसायन' को छोड़कर संत अखा ने ~~असत~~ उनका परिशोधन किया । उस काव्य में प्रचलित लौकिक आलंबनों के स्थान पर निर्गुण ब्रह्म एवं आत्मा-प्रिया के मिलन का आनंदपूर्ण गान किया ।

वे स्वभाव से प्रखर बुद्धिवादी, क्रांतिप्रिय, फक्कड़ एवं मनमौजी थे । उनकी स्वभावगत इन विशेषताओं ने ही उनको समाज में दृढ़मूल घर किये हुए अवतारवाद, पुनर्जन्म, कर्मवाद आदि विषयक अंध विश्वासों, बाल विवाह, सती प्रथा आदि कुप्रथाओं तथा वेश्यागमन, अस्पृश्यास्पर्श आदि दूषणों का तिक्त शैली में डंके की चोट विरोध करने की ओर प्रेरित किया । उन्हों ने भेद दृष्टि, अल्पता एवं मिथ्याचार के स्थान पर समदृष्टि, सहानुभूति एवं

सदाचार का बर्ताव करने का उपदेश किया । इतना ही नहीं अपने समय में प्रचलित विभिन्न कुच्छ साधनाओं को गलत बता करके " सहज साधना " के बल पर अपनी आत्मा को ही पहचानने का सदुबोध किया ।

हिन्दी एवं गुजराती – दोनों भाषाओं पर इतना समर्थ अधिकार जतानेवाला अन्य कोई संत कवि गुजरात में नहीं जन्मा । अखा ने अपनी भाषा के पास से मनचाहा काम लिया । उनकी भाषा उनकी वशवर्ती थी । भारतीय संत साहित्य में विशिष्ट छंद एवं काव्य प्रकारों के रूप में रूढ़ रूप में प्रचलित " ज्ञान प्रधान साखियों " एवं " कुंडलियों " का स्वीकार कर गुजराती साहित्य के भंडार में अपनी ओर से नवीन योग दिया । इतना ही नहीं गुजराती एवं हिन्दी में निर्मित विपुल रचनाओं के साथ विशेषकर " संतप्रिया " एवं "ब्रह्मलीला" जैसे सर्वथा नवीन काव्य प्रकारों के प्रयोग द्वारा भारतीय संत साहित्य के भंडार में अपनी ओर से पत्र पुष्प अर्पण किये ।